सितम्बर - 2024

दैनिक नैतिक प्रभात

बाल कहानी संग्रह

मिशन शिक्षण संवाद

दैनिक नैतिक प्रभात

(बाल कहानी संग्रह)

अनुक्रमणिका माह - सितम्बर 2024

क्रमांक	बाल कहानी	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1	जंगल का मोर	जुगल किशोर त्रिपाठी	1
2	समझदारी	रचना तिवारी	2
3	कर्म और भग्य	अंजनी अग्रवाल	3
4	लालच बुरी बला	पुष्पा शर्मा	4
5	आँधी	शालिनी	5
6	सफर	शमा परवीन	6
7	गुरु की महिमा	दमयन्ती राणा	7
8	रोहन का बगीचा	धर्मेंद्र कुमार शर्मा	8
9	रक्षा	जुगल किशोर त्रिपाठी	9
10	अमरूद	शमा परवीन	10
11	नीड़ परजीविता	सरिता तिवारी	11
12	बिजली	शालिनी	12
13	बटुआ	अंजनी अग्रवाल	13
14	बुजुर्गों की बात	दीपक कुमार यादव	14
15	बफादार	पुष्पा शर्मा	15
16	बड़ों की बात	सुमन देवी	16
17	मददगार चिड़िया	दमयन्ती राणा	17
18	नई सोच	पुष्पा शर्मा	18
19	समय	शमा परवीन	19
20	शिक्षा का महत्त्व	धर्मेंद्र कुमार शर्मा	20
21	चिंटू का जन्म-दिन	शमा परवीन	21
22	योजना	जुगल किशोर त्रिपाठी	22

संस्कार सदेश दिनांक - 02-09-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 156/2024
बाल कहानी दिन - सोमवार
मिशन शिक्षण संवाद

जंगल का मोर

एक घने हरे-भरे जंगल में एक मोर रहता था। वह बहुत ही सुन्दर और रोचक नृत्य करता था। सभी लोग जो वहाँ घूमने आते थे, वे मोर का नृत्य देखकर बहुत प्रसन्न होते थे। मोर घण्टों नृत्य करता और सभी लोग टकटकी लगाये उसे देखते रहते। आसमान में जब काले घनघोर बादल छाते, तब मोर रोज नाचता और सभी हल्की-हल्की फुहारों का आनन्द नृत्य के साथ लेते। सभी उस पल को अपने-अपने मोबाइलों में कैद कर लेते। इस तरह बहुत दिन बीतते गये।

एक बार बहुत से सैलानी उस जंगल में घूमने आये। उन्होंने दिन-भर मोर का इन्तजार किया किन्तु मोर न दिखाई दिया। सभी लोग अनमने और चिन्तित हो गये। असल में लोग मोर का नृत्य देखने ही जंगल में अपने परिवार सहित आते थे। बच्चों को मोर का नृत्य देखने में बड़ा आनन्द आता था। वह नृत्य देखकर खुशी से उछलते और झूमने लगते। अब सभी बच्चे निराश होकर अपने-अपने पापा से पूछते कि-, "पापा! मोर कहाँ गया..क्या किसी जंगली जानवर ने उसे खा तो नहीं लिया या फिर हो सकता है कि वह बीमार हो।" बच्चों की बातें सुनकर सभी ने जंगल छान मारा, लेकिन मोर का कोई पता न लगा। अन्त में सभी निराश होकर अपने-अपने घर लौट गये।

वहीं पास के गाँव में रहने वाला सुजीत नाम का लड़का मोर की तलाश में जंगल में घूम रहा था। घने जंगल और नदी के पार एक पहाड़ी थी, जिसमें एक बड़ी गुफा थी। उस गुफा में कोई नहीं जाता था। सुजीत मोर को खोजता हुआ उसी गुफा के पास जा पहुँचा। तभी उसे किसी के कराहने की आवाज आयी। वह तुरन्त गुफा के भीतर गया और देखा कि वही मोर पड़ा हुआ कराह रहा है। उसके शरीर पर अनेक घाव थे। जैसे ही सुजीत ने उसे घायल अवस्था में देखा, वह तुरन्त गुफा के बाहर आया और चिल्लाया-, "कोई है.. कोई है?"
तभी उधर घूम रहे कुछ लोगों का ध्यान उस ओर गया। वह तुरन्त वहाँ आये तो सुजीत ने बताया कि -, "मोर यहाँ है। उसके शरीर पर अनेक घाव हैं। उसे इलाज की आवश्यकता है।" लोग ऊपर चढ़े और सुजीत उन्हें गुफा के अन्दर ले गया। लोगों ने तुरन्त मोर को उठाया और सुजीत को उसके घर छोड़कर मोर को अस्पताल ले गये। कुछ ही दिनों में मोर बिल्कुल स्वस्थ हो गया और उन लोगों की मदद से उस जंगल में वापस आ गया। तब अन्य मोरों ने उसको घेर लिया। अब मोर फिर पहले की तरह नाचने लगा और सभी को अपने नृत्य से प्रसन्न करने लगा।

संस्कार सन्देश

हमें पशु-पक्षियों और जानवरों की सदैव रक्षा करना चाहिए।

लेखक-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट) मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

संस्कार सदेश दिनांक - 03-09-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 157/2024

बाल कहानी दिन - मंगलवार

मिशन शिक्षण संवाद

समझदारी

राधा एक दिन खेलते- खेलते अपने पिताजी के दफ्तर के बाहर पहुँच गयी। जहाँ उसने देखा कि उसके पिताजी पानी से भरी ग्लास की ट्रे लेकर कुछ लोगों के सामने खड़े हैं।
जब राधा ने यह देखा कि कुछ लोग कुर्सियों पर बैठे हैं और उसके पिताजी उन बैठे हुए व्यक्तियों के लिए पानी लेकर खड़े हैं। यह देखकर राधा के साथ जो बच्चे खेल रहे थे, वह भी उस पर हँसने लगे और राधा से कहने लगे कि, "तुम्हारे पिताजी यह काम करते हैं?"
यह देखकर राधा का मन उदासी से भर गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह खेल को छोड़कर अपने घर चली गयी।
जब शाम को उसके पिताजी घर आये, तो राधा ने उनसे पूछा कि, "आप अपने दफ्तर में उन बैठे हुए लोगों के लिए पानी लेकर क्यों खड़े थे? क्या आप वहाँ पर पानी पिलाने का काम करते हैं?"
तब उसके पिता ने अपनी बेटी को समझाते हुए कहा, "हाँ, बेटा! मैं ज्यादा पढ़ा- लिखा नहीं हूँ और न ही मैं दफ्तर में कोई अधिकारी हूँ, परन्तु कोई भी काम बढ़ा या छोटा नहीं होता। इसी काम के पैसों से हमारा घर चलता है। हमें अपने काम में कभी भी शर्म नहीं करनी चाहिए। जब हमारे घर पर कोई अतिथि या अन्य वर्ग का व्यक्ति आता है तो क्या हम उसे पानी नहीं पिलाते हैं..चाय- नाश्ते और भोजन के लिए नहीं पूछते हैं? भूखे को भोजन भी कराते हैं। फिर इसमें शर्म कैसी? मैं तुमको खूब पढ़ाना चाहता हूँ ताकि तुम अधिकारी बनो और मेरा नाम रोशन करो।"
अपने पिता की बातें सुनकर राधा अपनी सोच पर शर्मिन्दा हुई और अपने पिताजी के गले लग गयी और बोली-, "सचमुच! आप महान हैं। ये तो मैंने सोचा ही नहीं था।"
राधा ने अपने पिताजी से वादा किया कि, "मैं खूब पढ़ाई करूँगी और आपका नाम रोशन करूँगी।"

संस्कार सन्देश

काम छोटा हो या बड़ा, हमें अपने काम को सदैव ईमानदारी से करना चाहिए।

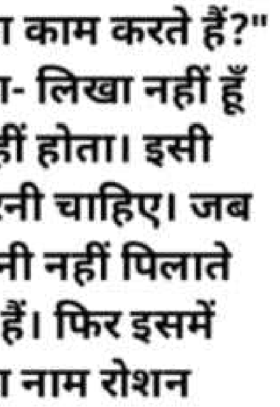

लेखिका-

रचना तिवारी (स०अ०)
प्रा० वि० ढिमरपुरा पुनावली, कलां (बबीना) झाँसी (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 04-09-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 158/2024

बाल कहानी दिन - बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

कर्म और भाग्य

दो दोस्त थे, कर्मदीन और भाग्यदीन। दोनों ही अपने-अपने काम खूब लगन और विश्वास के साथ करते थे। भाग्यदीन मानता था कि वह कोई भी कार्य को करे चाहे ना करे, अगर उसके भाग्य में लिखा होगा तो उसका काम अवश्य पूर्ण हो जायेगा। दूसरी तरफ कर्मदीन भाग्य को तो मानता था लेकिन फिर भी उसका ऐसा मानना था कि हमें भाग्य में तभी वह कोई चीज मिलती है, जब हम उसके लिए कर्म करते हैं। इसलिए वह सदैव कहता था कि, "भाग्य से बड़ा कर्म होता है और अगर हम कर्म अच्छे करेंगे तो हमारा भाग्य भी सदैव हमारा साथ देगा। ऐसे ही विश्वास के साथ वह सदैव अच्छे कार्य किया करता था।

दोनों ही दोस्तों का यही मानना था कि बड़े होकर कुछ न कुछ ऐसा कार्य करेंगे, जिससे कि दुनिया में उनका नाम हो और इसी विश्वास के साथ दोनों ही अपने कार्य में सदा मगन रहते थे। भाग्य दीन मेहनत नहीं करता था और सिर्फ यही सोचता था कि, "हम चाहे जितनी भी मेहनत कर लें, अगर हमारे भाग्य में नहीं लिखा है तो हमें कभी भी नहीं मिलेगा और अगर भाग्य में लिखा है तो हमें तुरन्त वह चीज बिना किसी मेहनत के मिल जाएगी, जबकि कर्मदीन कर्म सदैव अच्छे करता रहता था। इसी उद्देश्य से वह सदैव पढ़ाई पूरे मन और लगन से करता था। उसका एक ही सपना था, बड़े होकर एक आईपीएस अधिकारी बनने का। वह सदैव सबसे कहता था कि, "वह बड़ा होकर आईपीएस अधिकारी बनेगा और जो समस्याएँ हैं, उनका समाधान कर दूँगा। जैसे- यातायात की समस्या। उसके लिए मैं नये-नये नियम बनाऊँगा। किसी को भी मार्ग में भीड़ का सामना नहीं करना पड़ेगा। मैं ऐसे नियम बनाऊँगा, जिससे कि सभी को आराम से समय से अपने-अपने स्थान पर पहुँचने में कोई बाधा नहीं आयेगी। इसी के लिए वह सदैव लगन से पढ़ाई करता रहता था। जब उसने आईपीएस की परीक्षा दी। रिजल्ट आया तो उसे मायूसी ही हाथ लगी। उसका परीक्षाफल नकारात्मक था। उसे दुःख बहुत हुआ। बहुत परेशान हुआ लेकिन फिर जल्द ही अपने आप को समझाते हुए उसने उतनी ही और ज्यादा जोश और परिश्रम से परीक्षा दी। अब उसको परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। वह एक बहुत बड़ा आईपीएस अधिकारी बन गया।

दूसरी तरफ उसका दोस्त जो भाग्यदीन था, वह अपने भाग्य के सहारे बैठा रहता था और सोचता था कि अगर मेरे भाग्य में होगा तो मुझे अवश्य वह चीज मिल जायेगी। ऐसा सोचते- सोचते उसने एक बिजनेस शुरू किया, जिसके लिए वह कभी भी मेहनत नहीं करता था। वह दुकान में जाता और बैठ जाता। हमारे भाग्य में होगा, तो कोई न कोई बड़ा व्यापारी आकर मुझसे सामान लेगा और मैं दिन- दूनी रात- चौगुनी तरक्की कर लूँगा। किस्मत ने उसका साथ दिया और उसका भी व्यापार चल निकला। वह बहुत बड़ा आदमी बन गया।

एक दिन दोनों दोस्त मिले तो कर्मदीन ने अपने बारे में बताया और भाग्य दिन ने अपने बारे में बताया। भाग्यदीन बोला, "देखा! मैंने तो बिल्कुल भी मेहनत नहीं की और इतना बड़ा आदमी बन गया हूँ।" तब कर्मदीन बोला, "हाँ, अवश्य बन गए हो, परन्तु तुम्हारी बिना मेहनत के तुम्हें जो फल मिला है, उससे इतनी आत्म- सन्तुष्टि नहीं होती है और कभी न कभी आदमी को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। आज मुझे तुम्हारी ही दुकान का सर्वे करने को मिला है और तुम्हारी दुकान में किसी ने शिकायत की है कि गैर कानूनी काम होता है, जिसकी मुझे जाँच- पड़ताल करनी है। मुझे इसके लिए तुमसे पूरी बातें जाननी हैं। मैं कोई भी गलत रिपोर्ट आगे नहीं दूँगा। अब तुम यह बताओ कि तुमने अपने बिजनेस में क्या जोड़- गाँठ लगायी है?" भाग्यदीन को कुछ हिसाब-किताब तो आता नहीं था। बोला, "बस! ऐसे ही बेच देता हूँ और मुझे मुनाफा प्राप्त हो जाता है।" तब कर्मदीन ने कहा कि, "बिना किसी बात की जाँच- पड़ताल किए तुम जो व्यापार कर रहे हो, वह गलत है। हमें भाग्य के सहारे नहीं रहना चाहिए। थोड़ा कर्म भी करना चाहिए।" तब जाकर भाग्यदीन को समझ में आया। वह कर्म भी करने लगा और उसका भाग्य चमक उठा।

संस्कार संदेश

सच! भाग्य तभी साथ देता है, जब हम उसके लिए प्रयास करते हैं अर्थात कर्म करते हैं।

लेखक

अंजनी अग्रवाल (स०अ०)उच्च प्रा० वि० सेमरुआ (कानपुर नगर)

कहानी वाचक-नीलम भदौरिया जनपद- फतेहपुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 05-09-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 159/2024

बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार

मिशन शिक्षण संवाद

लालच बुरी बला

रामू और श्यामू बहुत शरारती थे। वह रोज एक नई शरारत करते थे। गाँव के सभी लोग उनके परेशान थे। किसी की गाय को खोलकर खेत में छोड़ देते, किसी की बकरी को ले जाकर उसका दूध निकाल कर बेच देते थे। उनके मोहल्ले में रामदीन बाबा जो बहुत बुजुर्ग थे, अपने चबूतरे पर चारपाई पर लेटे रहते थे। उनको आँखों से कम दिखाई देता था। यह दोनों उनको बहुत परेशान करते। उनके चिल्लाने पर घर वाले निकलकर आते, तब यह भाग जाते।

एक दिन बाबा ने उनको पास बुलाया और कहा कि, "बच्चों! आप बहुत होशियार हो। मेरे खेत के पास में एक ट्यूबेल हैं। उसके दाहिने तरफ मेरा खजाने का बक्सा गड़ा हुआ है। आप लोग उसको लेकर आओ।" दोनों बाबा के कहे अनुसार वहाँ पर गये और खुदाई चालू कर दी। वहाँ उनको कुछ भी न मिला। उन्होंने बाबा से आकर के कहा। तब बाबा ने कहा कि, "खजाना खेत में खिसक गया होगा। मेरे बच्चे तो आलसी हैं। यह काम तुम ही कर सकते हो। मैं आपको सौ रुपये इनाम में दूँगा।" अगले दिन वह पावड़ा लेकर खेत पर गये और खुदाई चालू कर दी। अब भी उनको कुछ न मिला। वह वापस आकर बाबा पर गुस्सा हुए और अपना इनाम माँगा। बाबा ने कहा-, "एक महीने बाद आना।" बाबा की चारपाई के नीचे एक बाजरा की बोरी रखी हुई थी। उन्होंने चुपके से निकाल ली और भाग गये। वे उसे खेत पर बिखेर कर आ गये। उनके दिमाग में तो सिर्फ शरारत ही रहती थी। कुछ दिनों बाद जब वह स्कूल जा रहे थे, तो उन्होंने बाबा का खेत देखा। वहाँ पर फसल लहलहा रही थी। कुछ दिनों के बाद उन्होंने देखा कि उनके बेटे उस फसल को काट, रहे थे और बोरी में भर रहे थे। उन्होंने बाबा से जाकर कहा, "बाबा! आपके खेत में जो फसल हुई है, वह हमारी मेहनत है।" बाबा ने अपने बेटों को बुलाया और कहा, "इस फसल का आधा पैसा इन बच्चों को देना।

उनके बेटे लड़ने लगे। तब बाबा ने कहा, "यह दोनों बच्चे शरारती थे इसलिए इनको सबक मैंने सिखाया है, ताकि यह सुधर जायें। झूठ खजाने का बहाना बनाया था। खेत की खुदाई इन बच्चों ने की है। अनजाने में ही सही.. यह चोरी करके मेरा बाजरा ले गए थे और खेत में डालकर आ गये थे। मुझे कम दिखाई देता है, इन्होंने यही सोचा था लेकिन उनकी मेहनत से यह फसल हुई है। इसका आधा दाम इन बच्चों को दे।" आधा दाम पाकर दोनों बड़े खुश हुए। उन्होंने बाबा से माफी माँगी और कहा कि, "आज के बाद हम शर्त नहीं करेंगे और मेहनत करेंगे क्योंकि लालच बुरी बला होती है। आज हमारी समझ में आ गया। सभी गाँव वाले उन दोनों बच्चों से खुश हुए और उन्हें गले लगा लिया।

संस्कार संदेश

किसी के द्वारा किए गए कार्य का इनाम असली हकदार को ही मिलना चाहिए। हमें किसी की भी मेहनत का नहीं खाना चाहिए।

कहानीकार

पुष्पा_शर्मा (शि०मि०) राजीपुर, अकराबाद अलीगढ़ (उ०प्र)
कहानी वाचक-नीलम भदौरिया जनपद- फतेहपुर (उ०प्र०)

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com 9458278429

संस्कार संदेश दिनांक - 06.09.2024
दैनिक नैतिक प्रभात -160/2024
बाल कहानी दिन -शुक्रवार
मिशन शिक्षण संवाद

आँधी

गोपालपुर गाँव में मेला लगा हुआ था। गोपालपुर में रहने वाले बिरजू और भोला नामक दो भाई मेला देखने के लिए तैयार हो गये। दोनों गरीब थे। मेला देखने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। बिरजू ने भोला से कहा, "भोला! हमारे पास तो पैसे ही नहीं हैं। हम मेला कैसे देखेंगे? हम तो वहाँ से कोई खिलौना भी नहीं ले पायेंगे।"
भोला ने कहा, "अरे बिरजू! तू चल.. हम ऐसे ही मेले में घूमेंगे।" दोनों भाई मेले में पहुँच गये। दोपहर को अचानक मेले में तेज आँधी आ गयी। आँधी आने से मेले में अफरा-तफरी मच गयी। दुकानदारों का बाहर लटका हुआ सारा सामान तेज आँधी से इधर-उधर उड़ने लगा। सारे खिलौने इधर-उधर बिखर गये। कुछ लोग आँधी में फैले हुए सामान को चुराने की कोशिश करने लगे। बिरजू और भोला ने देखा तो तुरन्त उस फैले हुए सामान को बटोरकर दुकानदारों को लौटाने लगे और लोगों को सामान उठाने से मना करने लगे। जब आँधी थम गयी तो दुकानदारों का बहुत- सा सामान गायब था लेकिन बिरजू और भोला ने दुकानदारों का बहुत सारा सामान आँधी से बचाकर उन्हें लौटा दिया था। दुकानदारों ने दोनों को धन्यवाद कहा और खुशी से बोले, "बेटा! तुमने हमारी बहुत मदद की है। नहीं तो हमारा बहुत नुकसान हो जाता। ये लो कुछ खिलौने.. इनसे तुम खेल लेना.. हमें बहुत खुशी होगी।" बिरजू और भोला बहुत खुश हुए क्योंकि जो खिलौने वह ले ना सके थे। वह उनके हाथों में थे। उन्होंने ईमानदारी का नेक परिचय जो दिया था।

संस्कार सन्देश

आपदा आने पर हमें उसका अवसर नहीं उठाना चाहिए बल्कि लोगों की मदद करनी चाहिए।

लेखिका-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना, सुल्तानगंज, मैनपुरी

संस्कार सदेश दिनांक - 07.09.2024
दैनिक नैतिक प्रभात –161/2024
बाल कहानी दिन -शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

सफर

रिया और प्रिया दो बहनें थीं। रिया कक्षा आठ और प्रिया कक्षा सात की छात्रा थी। रिया के मुकाबले में प्रिया बहुत चंचल थी। छुट्टियों का दिन था। रिया और प्रिया नानी के घर अभिभावक के साथ जा रही थी। दोनों बहनें बहुत खुश थीं। दोनों को सफर करना बहुत अच्छा लगता था।
बस में चढ़ते ही रिया बस की खिड़की के पास बैठ गयी और प्रिया पिताजी का मोबाइल लेकर तेज आवाज में कार्टून देखने लगी।आस-पास कुछ बुजुर्ग लोग बैठे थे। उनको तेज़ आवाज़ से दिक्कत हो रही थी, पर वो कुछ कह नहीं पा रहे थे। बस! अपने कान को बन्द करने की कोशिश कर रहे थे। रिया बुजुर्गों की दिक्कत को महसूस कर रही थी, पर प्रिया कार्टून देखने में गुम थी। रिया से रहा नहीं गया। उसने अपनी छोटी बहन प्रिया को समझाया। प्रिया ने रिया की एक न सुनी। रिया के माता-पिता सारी बातें सुन रहे थे। उन्होनें इधर-उधर गौर करके देखा तो उनको रिया की बातों में सच्चाई दिखी। देर न करते हुए उन्होंने प्रिया के हाथ से मोबाइल लेते हुए प्रिया को प्यार से समझाया। प्रिया को बात समझ में आ गयी। उसने रिया दीदी से माफी माँगी। रिया ने तुरन्त माफ कर दिया और प्रिया को बस की खिड़की के पास बैठा दिया। प्रिया सफर का मजा लेने लगी।

संस्कार सन्देश

सफर करते समय हमें ये ध्यान रखना चाहिए कि कहीं हमारे शौक की वजह से किसी को कोई दिक्कत तो नहीं हो रही है।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच, उत्तर प्रदेश

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 10-09-2024
162

बाल कहानी

गुरु की महिमा

मंगल नाम का एक धनी व्यक्ति था। उसका एक बेटा था। उसका नाम रामू था। वह अपने माता- पिता का लाडला और इकलौता बेटा का था। वह बहुत आलसी था। पढाई पर भी वह ध्यान नहीं देता तथा दोस्तों के साथ घूमता- फिरता रहता था।

एक दिन उसके पापा ने रामू से कहा, "बेटा! अब तुम बडे हो गये हो। ये घूमना- फिरना छोड़ दो और अपनी पढाई पर ध्यान दो। पढाई से ज्ञान प्राप्त होता है। जीवन में वही सफल होता है, जिसके पास ज्ञान होता है।" बहुत समझाने के बाद भी जब वह नहीं माना तो उसके माता- पिता को रामू के भविष्य की चिन्ता होने लगी। आखिर रामू के भविष्य को लेकर उसके माता- पिता ने यह निर्णय लिया कि अब रामू को कुछ साल तक अपने से दूर रखना होगा। तब रामू के पापा उसके गुरू जी (जो रामू को पढाते थे) के पास जाकर रामू के बारे में बताते हैं और उसके गुरु से कहते कि, "मेरे बेटे की जिम्मेदारी आज से तुम्हारी। मेरे बेटे का भविष्य आप के हाथ में है। मैं जीवन भर आपका आभारी रहूँगा।

अब रामू अपने गुरु जी के साथ रहने लगा। उसके गुरु जी ने रामू को अच्छे- बुरे का ज्ञान बताया कि जीवन में संघर्षों से कैसे लड़ना है? अब रामू अच्छे से पढाई करने लगा। धीरे- धीरे वह पढाई में रूचि लेने लगा तथा गुरु की आज्ञा का पालन करने लगा। अपनी पढाई पूरी करके जब वह घर लौटा तो उसके माता- पिता बहुत खुश हुए क्योंकि वह बहुत ही संस्कारी और आज्ञाकारी हो गया था। वह अपने से बड़ों का सम्मान एवं माता- पिता की आज्ञा का पालन करता था। वह आगे चलकर एक आदर्श नागरिक के रूप में विख्यात हुआ।

संस्कार सन्देश-

गुरु ज्ञान मार्गदर्शन और प्रेरणा का स्रोत है जो हमें जीवन में सच्ची राह दिखाता है।

लेखिका

दमयन्ती राणा (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
कर्णप्रयाग (उत्तराखण्ड)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 11-09-2024
163

बाल कहानी

रोहन का बगीचा

रोहन एक ग्रामीण परिवार में रहता था। वह अपने परिवार में सबसे छोटा और होनहार लड़का था। रोहन नियमित विद्यालय जाता। वह गाँव में सरकारी स्कूल में पढ़ता था। बरसात शुरू होते ही विद्यालय में वृक्षारोपण शुरू हो गया। साथ ही वृक्षारोपण और पर्यावरण सन्तुलन के महत्व पर शिक्षकों द्वारा स्कूल के छात्रों को जानकारी दी गयी। साथ ही सभी बच्चों को अपने-अपने घरों में वृक्ष लगाने के लिए कहा गया। उसी समय रोहन ने सोचा कि मैं भी अपने घर के बाड़े में वृक्ष लगाना शुरू करूँगा और उसने यह काम जल्द ही शुरू कर दिया।

उसके पास पौधे खरीदने के पैसे तो होते नहीं थे और न ही गाँव-देहात में पौधशाला होती है तो वह नए अंकुरित पौधे कहीं मिल जायें या बीज मिल जाते तो उनसे पेड़-पौधे विकसित करने का प्रयास करता और वह उस कार्य में सफल भी रहा।

रोहन ने सबसे पहले अपने माता-पिता के नाम के दो पेड़ लगाये,फिर उसने अपने सभी परिवार के सदस्यों के नाम के अलग-अलग पेड़ लगाये।

इसका असर यह हुआ कि रोहन के घर के चारों तरफ हरियाली हो गयी और वहाँ बहुत सुन्दर लगने लगा। यह बात विद्यालय में सभी को पता चली तो स्कूल में रोहन की बहुत प्रशंसा हुई और उसे सम्मान मिला।

जिसे देखकर स्कूल के अन्य छात्रों ने प्रेरणा लेकर पेड़-पौधे लगाना शुरू किया। सभी बच्चों की वृक्षारोपण के प्रति रुचि देखकर गाँव वालों ने भी उनका साथ दिया। देखते ही देखते कुछ सालों में पूरा गाँव हरा-भरा हो गया।

संस्कार सन्देश

वृक्ष हमें शुद्ध वायु प्रदान करते है और वर्षा कराने में सहायक होते है इसलिए हमें वृक्षारोपण करना चाहिए।

लेखक

धर्मेंद्र कुमार शर्मा (स०अ०)
कन्या० प्रा० वि० टोडी-
फतेहपुर गुरसरांय (झाँसी)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

बाल कहानी

रक्षा

बहुत जोर की बारिश हो रही थी। चारों ओर नदी और नाले उफान पर थे। बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें टप-टप की जोरदार आवाजें कर रही थीं। ऐसे में बाहर निकलना बहुत ही मुश्किल था। लोग अपने-अपने घरों, छायादानों में बैठकर गरजते-चमकते बादलों का ताँडव और बारिश का कहर टकटकी लगाए देख रहे थे। कुछ समय तक ऐसे ही चलता रहा। जब बारिश धीमी हुई तो मुहल्ले के सभी बच्चे बारिश में नहाने निकल पड़े। उनके घरवालों ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, किन्तु वे न रुके। बच्चे बारिश की बरसती-उछलती बूँदों में जाकर नहाने और उछलने लगे। वे तालियाँ बजाकर जोर-जोर से किलकारियाँ भरते और एक-दूसरे के ऊपर गिरते तथा बारिश के पानी में लोटते। बालपन की ये निश्छल शरारतें देखते ही बनती थीं।

तभी अचानक सभी बच्चों को नाले में एक छोटा-सा कुत्ते का बच्चा बहते हुए दिखाई दिया। सभी बच्चे चिल्लाये-, "पिल्ला..पिल्ला..।" कुछ बच्चे बोले-, "कहाँ हैं पिल्ला?" एक ने कहा-, "देखो, ये है..नाले में बहकर आ रहा है। कई-कई चिल्ला रहा है। हमें इसे बचाना चाहिए, वरना यह मर जायेगा।" सभी बच्चे उसे बचाने दौड़ पड़े, किन्तु पानी के तेज बहाव के कारण उसे पकड़ न सके। सभी बच्चे उसके आगे दौड़े। तभी कुछ बच्चे उसके आगे नाले में कूद पड़े और उसे पकड़कर बाहर कर दिया। कुछ बच्चों ने उसे उठाकर एक ओर सुरक्षित जगह पर रख दिया। कुछ समय बाद वह सामान्य हो गया। वहाँ उपस्थित लोगों ने उन बच्चों की सराहना की। इस तरह बच्चों की सूझ-बूझ और तत्परता से एक जीव की जान बच गयी।

संस्कार सन्देश

हमें हमेशा जीवों की रक्षा करनी चाहिए। यही हमारा परम धर्म है।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

बाल कहानी

अमरूद

रेखा अपने छोटे भाई विजय के साथ स्कूल से घर जा रही थी। रास्ते में अमरूद का पेड़ लगा था। विजय ने दीदी से कहा, "रेखा दीदी! मुझे अमरूद खाना है, तोड़ के दो।" रेखा बोली, "मैं कैसे तोडूँ अमरूद? ये तो बहुत ऊँचाई पर है। मेरा हाथ नहीं पहुँच पा रहा है। घर चलो! माँ से कहकर तुम्हें अमरूद दिला दूँगी।"
"नहीं.. मुझे अभी चाहिए अमरूद और इसी पेड़ के.. वो देखो, जो गुच्छे में है वो वाला अमरूद चाहिए। घर जा कर नहीं मिलेगा। माँ बाजार जायेगी नहीं। वह पिताजी को फोन करके लाने को कहेगी और जब पिताजी रात को घर वापस आयेंगे, तब तक या वो लाना भूल जायेंगे या हम लोग सो जायेंगे। दीदी अभी मुझे इस पेड़ से अमरूद तोड़ के दो। मुझे अभी मन कर रहा है खाने का। देखो न.. कितने सारे अमरूद लगे हैं। मैं ईट मार कर तोड़ लूँ?" "नहीं भाई! ऐसा न करना। सब लोग आ-जा रहे है। अगर किसी को ईट लग गयी तो माँ बहुत गुस्सा होगी।" "दीदी! आप ही तोड़कर दो मुझे। अब कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आप पेड़ पर चढ़ने नहीं दे रही हो और ईट मारने से भी मना कर रही हो।" "ठीक है भाई! मैं कोशिश करती हूँ। पास एक डण्डा पड़ा है। मैं इसी डण्डे की सहायता से अमरुद तोड़ती हूँ।" वह अमरुद तोड़ने की कोशिश करती है। "ये डण्डा भी पहुँच नहीं रहा है। मैं उचक कर तोड़ती हूँ।" रेखा थोड़ा पीछे हटी और दौड़कर उचककर अमरूद के पेड़ पर डण्डा दे मारा। अमरूद तो नहीं गिरे, पर रेखा फिसलकर गिर गयी। उसे चोट लग गयी। वह रोने लगी। विजय ने दीदी को उठाया। किसी तरह दोनों घर पहुँचे। विजय अपनी जिद पर शर्मिन्दा हुआ। उसने अपने किए की माफ़ी माँगी और माँ को सारा सच बता दिया। माँ ने चोट पर मरहम लगाया फिर समझाया और गले से लगाया।

संस्कार सन्देश

हमे धैर्य रखना चाहिए। जिद नहीं करना चाहिए।

लेखिका

शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -14.09.2024
166

बाल कहानी

नीड़ परजीविता

एक सुन्दर सा बगीचा था। जहाँ मनमोहक फूल तथा स्वादिष्ट फलों के वृक्ष थे। बगीचे में आम के पेड़ पर कौवे का घोंसला था, जिसमें कौवा अपने परिवार के साथ राजी-खुशी से रहता था। वहीं थोड़ी दूर पर कोयल का एक जोड़ा भी रहता था। जो भी बगीचे में घूमने-टहलने आता, कोयल की मीठी बोली सुनकर भाव-विभोर हो उठता और कौवे की कर्कश आवाज सुनकर उसे बुरा-भला कहता। कौवा दूर-दूर तक अपने भोजन की तलाश में जाता और अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण करता।

कोयल के घर खुशखबरी आयी। चालाक और आलसी कोयल को अपना घोंसला तो नहीं बनाना था लेकिन बच्चे तो पालना ही था इसलिए इधर नर कोयल ने कौवे से अनावश्यक लड़ाई की। उधर मादा कोयल ने चुपके से अपने अण्डे लाकर कौवे के घोंसले में डाल दिए और कौवे के अण्डों को उठाकर बाहर फेंक दिया और खुद निश्चिन्त होकर इस शाखा से उस शाखा तक घूमने, उड़ने लगी। कौवा कोयल के अण्डों को अपना समझकर पालने लगे। जब अण्डे फूटकर बच्चे बाहर आये, कौवा फिर भी न जान पाया। बच्चों के पंख आ गये, तो वे भी अपने परिवार के साथ जाकर मीठी तान सुनाने लगे। कौवा ठगा-सा रह गया। उसको मालूम भी न चला कि जिसे वह पाल रहा था, असल में वे कोयल के बच्चे थे।

संस्कार सन्देश

ये दुनिया भी ऐसी ही है, जरा सी लापरवाही या कमजोरी में आपका फायदा उठाने से पीछे नहीं हटती। सावधान रहें, सतर्क रहें।

लेखिका
सरिता तिवारी (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय कन्दैला,
मसौधा (अयोध्या)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 18-09-2024
167
बाल कहानी

बिजली

दो-तीन दिन से लगातार बारिश होने की वजह से श्याम सिंह की रात की नींद उड़ी हुई थी। श्याम सिंह ने अपने खेत में हरी सब्जियों की खेती कर रखी थी। श्याम सिंह ने सोचा था कि हरी सब्जियों को बाजार में बेचकर अच्छे पैसे कमा लेंगे।

तीसरे दिन श्याम सिंह से रहा नहीं गया। उन्होंने अपने पुत्र से कहा, "देवा! मैं खेत की तरफ जा रहा हूँ।" देवा ने कहा, "पिताजी! रुक जाइए, आसमान में बिजली चमक रही है। खतरा है, खेतों पर मत जाओ।"

श्याम सिंह ने पुत्र की बात नहीं मानी और पुत्र को साथ लेकर खेतों की तरफ चल दिए। तेज बारिश के साथ बिजली चमक रही थी। खेत की सब्जियों को देखने के बाद में श्याम सिंह पेड़ के नीचे खड़े हो गये।

देवा ने कहा, "पिताजी! पेड़ के नीचे मत खड़े होइए, पेड़ के ऊपर सबसे पहले बिजली गिरती है। ऊँची चीजों पर बिजली गिरती है। यहाँ पर तो कोई पक्का मकान भी नहीं है, इसलिए हमें धरती पर खेत में ही बैठना होगा।"

श्याम सिंह और देवा खेत में उकड़ूँ मारकर और हाथ कानों पर रखकर बैठ गये। तभी बिजली गड़गड़ाहट के साथ पेड़ पर गिर पड़ी।

श्याम सिंह और देवा दोनों उठे और दोनों ने तेजी से भागकर गाँव के बाहर बने भवन के पास खड़े होकर अपनी जान बचायी। श्याम सिंह सोच रहे थे कि काश! उन्होंने पुत्र की बात मान ली होती और बारिश में खेत पर नहीं गये होते तो इस तरह संकट का सामना न करना पड़ता। उन्होंने अपने पुत्र से कहा, "मुझे तुम्हारी बात मान लेनी चाहिए थी। ईश्वर की कृपा थी, जो हम बच गये।" यह सुनकर पुत्र ने कहा, पिताजी! इसमें आपका कोई दोष नहीं है, शायद ईश्वर को यही मंजूर था। ईश्वर ने इस घटना के द्वारा हमें भविष्य के लिए संपर्क कर दिया ताकि हम प्रत्येक कार्य जल्दबाजी में न करके सोच-समझकर करें।"

"हाँ, पुत्र! अब हम भविष्य में इसका ध्यान रखेंगे। चलो, घर चलें।" इस प्रकार दोनों बातें करते हुए घर की ओर चल दिये।

संस्कार सन्देश

बारिश और बिजली के गिरने समय इससे बचने के लिए हमें घर में ही रहना चाहिए।

लेखिका

शालिनी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय रजवाना
विकासखण्ड- सुल्तानगंज
जनपद- मैंनपुरी

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 19-09-2024
168

बाल कहानी — बटुआ

एक दिन भाई-बहन ऋषभ और सुलोचना बाजार जाते हैं। भाई थोड़ा शैतान और लापरवाह किस्म का था, जबकि सुलोचना बड़ी होने के कारण बहुत ही समझदार थी। वह हर काम को समझदारी से करते हुए सदैव होशियारी का परिचय देती थी। एक दिन गाँव में थोड़ी दूर पर बहुत बड़ा मेला लगा था। दोनों भाई-बहन मेले में तैयार होकर चल देते हैं। सुलोचना एक छोटा-सा बटुआ लेकर मेले में अपनी बुआ के साथ चल देती है, वहीं उसका भाई ऋषभ सोचता है कि, "दीदी को तो कुछ ध्यान ही नहीं है। अब हम मेले में जायेंगे तो बहुत सारे खिलौने भी तो मिलेंगे और खाने का सामान भी मिलेगा तो क्यों न मैं बड़ा-सा थैला अपने साथ रख लेता हूँ।" लेकिन सुलोचना कुछ भी अपने साथ लेकर के नहीं जाती है सिर्फ एक अपना छोटा-सा हाथ से बनाया हुआ बटुआ लेकर बुआ के साथ बाजार को चल देती है। दोनों बाजार पहुँचते हैं।

ऋषभ मेले में इतने अच्छे-अच्छे घोड़े, हाथी और बहुत सुन्दर-सुन्दर खिलौने देखकर बहुत खुश होता है। वह सोचता है कि,

"आज मैं बहुत सारे खिलौने खरीद लूँगा और अपने साथ पॉलिथीन तो लाया ही हूँ, उसी में सब भरकर घर ले चलूँगा और ऐसा करते हुए वह कम से कम पन्द्रह से बीस छोटे-छोटे खिलौने खरीद लेता है और अपनी पॉलिथीन में भर लेता है, तभी रास्ते में उसे कुछ खाने का सामान भी दिखता है तो वह लालच में वह भी सामान भर लेता है। इधर बहन सुलोचना कुछ खास नहीं लेती, बस! सिर्फ अपने लिए एक सुन्दर-सा दुपट्टा खरीदती है। दोनों लोग मेला खूब मन से घूमने के बाद घर के लिए चल देते हैं।

रास्ते में अचानक बहुत तेज पानी बरसने लगता है। ऋषभ की पॉलिथीन फट जाती है। उसके सारे खिलौने जमीन में गिर जाते हैं। अब ऋषभ रोने लगता है तो बहन कहती है कि "भाई! तुम रोओ मत! मैं कुछ न कुछ करती हूँ।" भाई बोलता है कि, "तुम क्या करोगी? तुम्हारे पास तो खुद ही कुछ नहीं है। मेरे खिलौने इतने सारे! तुम हाथ में भी नहीं ले जा सकती। अब हम कैसे ले जायेंगे?" वह कहती है कि, "मैं सारे खिलौने मेरे बटुए में रख लेती हूँ।" ऋषभ उसकी मजाक बनाते हुए हँसता है और कहता है, "ही.. ही.. ही.. इतने सारे खिलौने और यह छोटा सा तुम्हारा बटुआ.. मजाक कर रही हो क्या दीदी?" तभी सुलोचना अपना बटुआ खोलती है और उसी के अन्दर से जादू से कहती है कि, "मेरे देखो! कितना बड़ा थैला है? जो उसने खुद बनाया था।" वह निकालती है और दिखाती है। अब ऋषभ बहुत खुश होता है और दीदी की होशियारी की तारीफ भी करता है। बुआ भी सुलोचना की इस होशियारी पर बहुत खुश होती है और तारीफ करती है और कहती है, "हमें पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि एक तो न तो वह मजबूत होती है और अगर हम उसे इधर-उधर फेंक देते हैं तो बेजुबान जानवर उसको खा सकते हैं और उनकी मृत्यु भी हो सकती है तो हमें सदैव अपने साथ बाजार जाते समय एक थैला लेकर के जाना चाहिए।" ऋषभ सब कुछ समझ चुका था।

संस्कार सन्देश

हमें पॉलीथीन के प्रयोग से दूर रहना चाहिए क्योंकि यह जानवरों के लिए जानलेवा होती है।

लेखिका

अंजनी अग्रवाल (स०अ०)
सरसौल (कानपुर नगर)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -20.09.2024
169
बाल कहानी

वफादार

रामू एक किसान था। उसके चार बच्चे थे। रामू के घर पर एक कुत्ता था, जिसका नाम टॉमी था। वह बड़ा वफादार था। रामू जब घर से बाहर जाता तो वह घर की रखवाली करता था। मोहल्ले में भी कोई बाहर का नहीं आ सकता था। टॉम सभी को प्यार करता और बच्चों के साथ खेलता था।

एक रात को घर की छत पर चोर आ गये और वह रस्सी डालकर आँगन में कूद गये। टॉमी ने देखा तो वह भौंकने की वजह चुपचाप हो गया। उसने सोचा, "यदि मैं चिल्लाऊँगा तो मेरे मालिक जाग जायेंगे और उनकी नींद खराब हो जायेगी।" उसने धीरे से बाहर का दरवाजा खोल दिया और सड़क पर पहुँचकर भौंकने लगा। उसको भौंकते देख गली के और भी कुत्ते आ गए थे क्योंकि वह अकेला भौंकता तो कोई भी जाग नहीं पाता। सभी कुत्तों की आवाज सुनकर पड़ोसी जाग गये। उन्होंने देखा कि रामू का दरवाजा खुला है और यह कुत्ते उधर ही भौंक रहे हैं। चोरों को पता नहीं चला। वह सारा सामान लेकर बढ़ ही रहे थे, तभी सभी पड़ोसी डण्डा लेकर घर में आ गये और रामू को आवाज दी तो चोर भागने लगे। कुत्तों और मुहल्ले वालों की मदद से चोर पकड़े गये। रामू शोर सुनकर बाहर आया और उसने यह सारा नजारा देखा तो आश्चर्य से भर गया। उसने सभी का शुक्रिया अदा किया, लेकिन पड़ोसी कहने लगे कि, "तुम्हारे कालू ने ही चोरों को भगाया है।" रामू ने कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है?" तब उसने देखा कि दरवाजा हम लगाकर सोए थे और दरवाजा खुला कैसे? रामू का छोटा बच्चा जाग गया था लेकिन वह डरकर बाहर नहीं निकला। उसने पिताजी को बताया कि, "कालू ने दरवाजा खोलकर अपने दोस्तों को बुलाया था और सारे कुत्तों की आवाज सुनकर पड़ोसी जाग गये। इससे हमारा सामान चोरी होने से बच गया।" तब रामू ने अपने कालू को गले लगाया और शाबाशी दी कि, "तुम सच्चे वफादार बेटे हो मेरे!" सभी पड़ोसियों ने भी उसे शाबाशी दी और चोरों को पुलिस को सौंप दिया।

संस्कार सन्देश

मनुष्य से अधिक जानवर वफादार होते हैं, खासकर कुत्ता। हमें उसकी हमेशा प्यार के साथ देखभाल करनी चाहिए।

लेखिका
पुष्पा शर्मा (शि०मि०)
राजीपुर, अकराबाद
अलीगढ़ (उ०प्र०)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -21.09.2024
170

बाल कहानी

बुजुर्गों की बात

सुबह की ही बात है, शिवा सोकर उठा ही था कि उसके बाबा ने उससे पीने के लिए पानी माँग लिया। बाबा बोले, " ऐ बच्चा शिवा! तनी एक लोटा पानी देई देय्यो बेटवा।" दादा की बात सुनते ही शिवा ने गुस्से से कहा कि, "बाबा! तुमका कउनो काम नाही न का, जे जब देख्यो, हमहिन से पानी माँगत रहथ हो।" यह कहकर शिवा आगे बढ़ गया।

सुबह-सुबह खेलते हुए जैसे ही वह अपने दोस्त शम्भू के घर पहुँचा तो उसने देखा कि, "शम्भू अपने बाबा का सिर दबा रहा है और उसके बाबा उसे दुआएँ दे रहे हैं कि, "बच्चा शम्भू! खूब पढ़ो-लिखो बेटा! राजा बाबू बनो मेरे लाल! भगवान तुमका बनाएँ रखें।" यह सब दृश्य देखकर शिवा को अपने किए पर बहुत पछतावा और आत्मग्लानि हुई। घर वापस आकर उसने अपने व्यवहार और वचनों के लिए अपने बाबा के पैरों में गिरकर माफी माँगी। बाबा ने उसे गले से लगा लिया और बोले कि, "बच्चा! बुढ़ाई सबही के आवत है। आज हमार है, कल तुम्हार आई। एहि कारन घर के बुजुर्गन के बात माने के चाही बेटवा।" शिवा को अब समझ में आ चुका था कि बुजुर्गों से कैसे व्यवहार करना चाहिए।

संस्कार सन्देश

हमें सदैव अपने माता-पिता और बुजुर्गों की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

लेखक

दीपक कुमार यादव (स०अ०)
प्रा० वि० मासाडीह,
महसी (बहराइच)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक - 23/09/2024
171

बाल कहानी

बड़ों की बात

एक दिन बहुत तेज पानी बरसा और गाँव में जगह-जगह तालाब में, सब स्थानों में पानी बहुत ज्यादा भर गया। गाँव के बच्चों को पानी में मस्ती करने में बड़ा मजा आता था। एक दिन सोहन ने सोचा कि स्कूल जाने से पहले थोड़ी देर पानी में मस्ती कर लेता हूँ, जबकि उसकी मम्मी ने उसे ऐसा करने के लिए मना किया, पर वह नहीं माना और मम्मी को बताए बिना ही स्कूल जाने से पहले ही वह स्कूल के लिए निकला और रास्ते में तालाब में कूद पड़ा, जहां उसमें बहुत सारा पानी भरा था।

वह झट से उस पानी में कूद गया और अपने दोस्त को भी साथ में ले लिया। वह मस्ती ही कर रहा था कि अचानक एक बिजली का तार पानी में पड़ा हुआ था। उसने देखा नहीं और तैरते-तैरते उसे बिजली के तार के पास पहुँच गया और वह तार को छूने ही वाला था कि उसके दोस्त ने उसको पकड़कर पीछे किया और बोला, "चलो जल्दी से बाहर निकलते हैं।" लेकिन तब तक उसे एक जहरीले कीड़े ने पैर में काट लिया और वह दर्द से चिल्लाने लगा। बाहर निकलते ही उसको ले जाकर डॉक्टर को दिखाया गया। उसके मम्मी-पापा को बताया। तब जाकर सोहन ठीक हुआ। उस दिन सोहन ने कहा कि, "हमें अपने मम्मी-पापा और बड़ों का कहना अवश्य मानना चाहिए क्योंकि वह हमें कभी भी गलत सलाह नहीं देते हैं और हमें गलत काम करने से बचना चाहिए।

संस्कार सन्देश-

हमें ये भली-भाँति जानकर कार्य करना चाहिए कि किसमें हमारी हानि है और किसमें लाभ है।

कहानीकार~

सुमन देवी (कक्षा- 8)
स्कूल पूर्व माध्यमिक विद्यालय सेमरुआ,
सरसौल (कानपुर नगर)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक - 24/09/2024
172

बाल कहानी
मददगार चिड़िया

एक पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला था, जिसमें उसके दो बच्चे थे। एक दिन चिड़िया अपने बच्चों के लिए दाना लेने के लिए जंगल में गयी। उस दिन पेड़ पर एक बन्दर आया। बन्दर फल खाने के लिए पेड़ पर गया। बन्दर ने जैसे ही फल पर हाथ लगाया तो बच्चे चीं-चीं करने लगे। तब बन्दर ने देखा कि वहाँ चिड़िया का घोंसला है। घोंसले को देखकर बन्दर सोचने लगा कि

चिड़िया ने कितना सुन्दर घोंसला बनाया है! बन्दर बहुत देर तक घोंसले को देखता रहा। तभी चिड़िया दाना लेकर अपने बच्चों के पास आयी। बन्दर को पेड़ पर देखकर चिड़िया बोली, "बन्दर भाई! यहाँ क्या कर रहे हो?" बन्दर ने कहा, "बहन! तुमने कितना सुन्दर घोंसला बनाया है! मैं भी घर बनाना चाहता हूँ। तुम मेरा घर बनाने में मेरी मदद करोगी।" चिड़िया बोली, "हाँ! तुम और मैं मिलकर तुम्हारे पेड़ के नीचे तुम्हारे लिए घर बनायेंगे।" चिड़िया ने बन्दर से कहा-, "मैं घास लाऊँगी और तुम पत्थर इकट्ठे करना।" चिड़िया घास लेकर आयी तथा बन्दर ने ढेर सारे पत्थर इकट्ठे किये। दोनों ने मिलकर बन्दर के लिए घर बनाया। अपना घर देखकर बन्दर बहुत खुश हुआ। उसने चिड़िया को 'धन्यवाद' दिया। रोज सुबह चिड़िया गाना सुनाती। बन्दर गाने को सुनकर ठुमुक-ठुमुक कर नाच दिखाता। बन्दर का नाच देखकर चिड़िया के बच्चे खुश रहने लगे।

संस्कार सन्देश~

पशु-पक्षी भी मनुष्य की तरह अपना जीवन स्वच्छन्दता के साथ जीना चाहते हैं। ऐसे जीवन जीने में उन्हें अपार सुख और खुशी मिलती है।

कहानीकार~

दमयन्ती राणा (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
वि० ख० कर्णप्रयाग, चमोली (उत्तराखण्ड)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 25-09-2024
173

बाल कहानी

नई सोच

पूजा एक विद्यालय में पढ़ती थी। वह बहुत होशियार थी और कक्षा चार में पढ़ाई में भी बहुत मेहनत करती थी। उसका सपना था कि वह एक अध्यापक बने। कुछ सालों बाद उसने बारहवीं पास की और आगे की पढ़ाई करने के लिए पिताजी से बोली, लेकिन पिताजी की आर्थिक स्थिति ठीक न थी। उन्होंने कहा बारहवीं बहुत है। हमें आपकी शादी भी करनी है लेकिन पूजा अन्दर ही अन्दर सोचने लगी। उसने गाँव के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया। ट्यूशन के पैसों से वह अपनी आगे की पढ़ाई करने लगी। उसने गाँव में एक कार्यशाला खोलने की सोची, जिसमें गरीब बच्चों को सिखा सके क्योंकि गाँव के बच्चे हस्तकला में निपुण होते हैं। अपने घर में एक बाहर का कमरा था। उसमें वह हस्त-कला की क्लास लेने लगी। माता-पिता से बात कर बच्चों को उसमें सीखने के लिए प्रेरित करने लगी।

एक दिन गाँव में पंचायत हो रही थी। उसमें वीडियो साहब आये हुए थे। पूजा वहाँ पर पहुँची और उनको अपने कार्य के बारे में बताया। वीडियो ने चलकर देखा तो वह बहुत खुश हुए कि पूजा इतना अच्छा कार्य कर रही है। उसको शाबाशी दी और कहा कि, "बिटिया! चिन्ता न करें और मैं इस कार्य के बारे में अवश्य अपने पंचायती अधिकारियों से बात करूँगा। पूजा को सामूहिक केंद्र खोलने के लिए धनराशि प्राप्त कर दी, जिसमें गरीब बच्चों को शिक्षा देकर कामयाब बना सके। पूजा के माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए। सभी लड़के-लड़कियाँ केन्द्र में कुछ न कुछ नया सीखने लगे। पूजा अपनी पढ़ाई के साथ-साथ केन्द्र पर चित्रकार रुचिपूर्ण कार्य कर रही थी ताकि बच्चे बड़े होकर हस्तकला में निपुण हों और अपनी जीवनकोपार्जन के लिए तैयार हो जायें। एक साल के बाद वीडियो साहब दोबारा आये और उन्होंने गाँव की तस्वीर को बदलते हुए देखा। तब पूजा को बहुत शाबाशी दी और सभी के सामने कहा कि, "नई सोच के साथ जीना पूजा ने ही सिखाया है। आज इस गाँव की तकदीर को बदलते मैंने देखा है। इस बिटिया को पुरस्कार मिलना जरूरी है। ऐसा ही हुआ। पूजा बारहवीं में पास हुई उसके बाद बी० टी० सी० कर विद्यालय में अध्यापक की नौकरी करने लगी। माता-पिता का खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने अपनी बच्ची की लगन और मेहनत की सराहना की, "आज तुमने मेरा सिर ऊँचा कर दिया। मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, उसके बावजूद भी आप कामयाब हुई। उन्होंने पूजा को गले लगा लिया और कहा कि, "आज के जमाने में बेटियाँ किसी से काम नहीं हैं। आज नये जमाने में नयी सोच के साथ जीना चाहिए।" पूजा ने कहा, "पिताजी! हम गाँव के लोग गरीब होते हैं। सुख-सुविधा न होने के कारण हम अपनी हस्तकला को देख नहीं पाते, इसलिए मैंने यह कार्य किया ताकि कोई हमको गाँव वाला न कहे।" ऐसा सुनकर सभी प्रसन्न हुए और पूजा को शाबाशी दी।

संस्कार सन्देश

हमें अपने परिवेश में हस्तकला और हुनर की पहचान करते हुए सभी को मौका देना चाहिए ताकि नयी सोच के साथ जीना सीख सके और सभी आगे बढ़ सके।

लेखिका

पुष्पा शर्मा (शि०मि०)पी० एस० राजीपुर,
अकराबाद, अलीगढ़ (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश

दैनिक नैतिक प्रभात

दिनांक 26-09-2024

174

बाल कहानी

समय

बात उन दिनों की है, जब मैं बहुत छोटा था। अक्सर स्कूल से भाग जाता था। ऐसा नहीं था कि कोई मुझे समझता नहीं था। अध्यापक, माँ जी, पिताजी और मित्र रोज समझाते थे- स्कूल चलो! शिक्षा ही जीवन है। पढ़-लिखकर कुछ बन जाओगे, वरना मजदूरी करोगे।"

पर मुझे न जाने क्या सवार था? मुझे अच्छे से याद है, जैसे-तैसे मैं कक्षा सात में पहुँच गया था। हर दिन स्कूल भेजने के लिए माँ जी पिताजी कोशिश करते थे। मेरा छोटा भाई और छोटी बहन यहाँ तक कि मेरे सारे मित्र प्रतिदिन समय से स्कूल जाते थे और मैं बस्ता फेंक भाग जाता था।

एक दिन पिताजी को गुस्सा आया। उन्होंने मुझे दौड़ाया, पीटा और मुझे स्कूल साथ ले जाने लगे, तभी मैं पिता जी का हाथ छुड़ाकर भागा और भागते-भागते थक गया। दूर तक कहीं पिताजी नहीं दिखे। एक बस दिखी जो एक बड़े से पेड़ के नीचे खड़ी थी। मैं जाकर बस की छत पर बैठ गया। तेज भागने के कारण पूरी तरह से मैं थक चुका था। बस की छत पर मैं लेट गया। बस पर पेड़ की छाव थी और ठण्डी हवा चल रही थी। कब मैं सो गया, पता नहीं चला।

सोया इस तरह कि गाँव से सीधे शहर पहुँच गया। तब से जिन्दगी से भाग रहा हूँ। आज मैं एक मजदूर हूँ। मेरी उम्र लगभग 40 साल है। माँ जी, पिताजी, भाई-बहन मित्र सभी की बहुत याद आयी, किन्तु इतने साल में बस यही सोचता रहा कि कुछ पैसे इकट्ठा कर लूँ, तब गाँव जाऊँ, पर नहीं कर पाया। आज लग रहा है कि बहुत देर हो गयी घर पहुँचने में। अब तो माँ-पिताजी बूढ़े हो चुके होंगे। भाई-बहन बड़े हो गये होंगे, शायद उनकी शादी भी हो चुकी होगी। सारे मित्र तो भूल गये होंगे। अब मुझे देर नहीं करना चाहिए। मुझे अपने गाँव, अपने घर पहुँचकर सबसे माफ़ी माँगनी चाहिए। ये सब सोचते-सोचते मैं एक बस पर जा बैठा और कुछ घण्टों में अपने गाँव पहुँच गया। रास्ते में बहुत से मित्र और रिश्तेदार मिलते गये, पर मुझे माँ जी, पिताजी से मिलने की जल्दी थी। मैं घर की तरफ दौड़ा और दौड़कर बिना दरवाजा खटखटाये घर के अन्दर जा पहुँचा। एक औरत दो बच्चों के साथ बैठी थी, वो मुझे डाँटने लगी और जोर-जोर से चिल्लाने लगी, "देखो- कौन दौड़कर घर में घुस आया। पवन के पिताजी जल्दी आइए।" तभी मेरा छोटा भाई मेरे सामने आ खड़ा हुआ, पर अब वह छोटा नहीं रहा। खूब बड़ा हो गया था। बिल्कुल मेरे बराबर। वह मुझे देखकर गले लग गया और जोर-जोर से रोने लगा, "भाई! आप कहाँ चले गये थे? माँ जी, पिताजी आपके जाने के दुःख में कई वर्ष बीमार रहे। मैंने बहुत इलाज कराया, पर बचा नहीं पाया। मैं और छोटी बहन डॉक्टर बन गये हैं। छोटी बहन की शादी एक वकील से कर दी, व बहुत खुश है। मेरा भी विवाह हो गया है। ये दोनो मेरे बच्चे है और ये मेरी पत्नी पूजा है। भाई! आपने वापस आने में बहुत देर कर दी। मैंने आपको बहुत ढूँढा, पर आप कहीं नहीं मिले। माँ जी, पिताजी अन्तिम साँस तक आपको देखने की इच्छा जता रहे थे, पर उनकी ये अन्तिम इच्छा मैं पूरी नहीं कर पाया।" मैं सब कुछ सुन रहा था, किन्तु क्या करता? बीता समय लौटकर अब नहीं आ सकता था। अब पछताने और दुःखी होने के अलावा कोई रास्ता शेष नहीं था।

संस्कार सन्देश

समय रहते हमें अपने गुनाहों की माफ़ी माँग लेनी चाहिए क्योंकि समय किसी के लिए नहीं रुकता।

लेखिका

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -27.09.2024
175

बाल कहानी

शिक्षा का महत्व

एक सुदूर गाँव में विद्यालय था। वहाँ के लोग ज्यादातर खेतिहर थे। सभी गाँव के लोग खेती-किसानी करते और बच्चों को भी खेती के काम मे ही लगाये रहते थे। उस गाँव की सालों से माँग थी कि गाँव में विद्यालय हो। माँग बढ़ी तो सरकार ने विद्यालय खोलने का आदेश दिया। वहाँ कुछ महीनों में विद्यालय बनकर तैयार हो गया। नये अध्यापकों का भी उस गाँव में आगमन हुआ। शिक्षा के प्रति ज्यादा रुचि न होने के कारण अध्यापकों ने गाँव में जागरूकता अभियान चलाया। समय-समय पर अध्यापक-अविभावक मीटिंग हुई। धीरे-धीरे गाँव वालों को शिक्षा का महत्व समझ आया और विद्यालय में छात्र नियमित उपस्थिति देने लगे, जिससे विद्यालय का माहौल मनोरम हो गया।
धीरे-धीरे नियमित छात्रों को देखकर अन्य छात्र भी रोज विद्यालय आने लगे। सभी अच्छे से पढ़ाई करने लगे। एक समय ऐसा आया कि गाँव के सम्पूर्ण छात्रों का दाखिला विद्यालय में हो गया और अच्छे से पढ़ाई होने लगी। बच्चे नयी-नयी चीजें सीखकर घर जाकर अपने माता-पिता को को बताते, जिससे माता-पिता खुश होते और रोज बच्चों को विद्यालय छोड़ने जाते। स्कूल के हर कार्यक्रम में सहभागिता करते कुछ साल बाद जब बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए बाहर जाने का समय आया तो माता-पिता के मन मे संशय हुआ। तब विद्यालय के अध्यापकों ने माता-पिता को समझाया और शिक्षा का महत्व भी बताया। तब जाकर माता-पिता उन्हें बाहर भेजने के लिए तैयार हुए। आगे चलकर वही छात्र पढ़-लिखकर बड़े-बड़े पदों पर आसीन हुए। इससे पूरे गाँव वालों को प्रेरणा मिली और अब पूरा गाँव शिक्षा को लेकर प्रतिबद्ध हो गया।

संस्कार सन्देश

शिक्षा हमें जीवन जीने के मायने सिखाती है। परिवार एवं समाज का शिक्षा के प्रति ध्यान आकर्षण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

कहानीकार-
धर्मेंद्र शर्मा (स०अ०)
क० प्रा० वि० टोडी
फतेहपुर गुरसराय (झाँसी)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 28.09.2024
176

बाल कहानी

चिंटू का जन्मदिन

चिंटू आज बहुत खुश था। खुश क्यूँ न हो, उसे आज नयी साइकिल जो मिली थी। चिंटू जैसे ही सोकर उठा, उसके अभिभावक ने चिंटू को जन्म-दिन की बधाई और खूब सारी शुभकामनाएँ दीं। चिंटू ये सब देखकर बहुत खुश हुआ। चिंटू कहने वाला ही था कि माँ-पिताजी मेरे जन्मदिन का उपहार कहाँ है? तभी चिंटू की माँ चिंटू को गोद में उठाकर बोली, "बेटा! अब उठो, तुम्हारा उपहार बाहर रखा है।" चिंटू दौड़कर कमरे के बाहर गया तो देखा- एक बहुत प्यारी साईकिल रखी हुई है। चिंटू बहुत खुश हुआ। उसने माँ पिताजी को धन्यवाद किया और बोला, "पिताजी! अभी तो मैं विद्यालय जाने के लिए तैयार हो जाऊँ। स्कूल से आकर इसे चलाना सीखूँगा।" तभी माँ बोली, "चिंटू! आज तुम्हारा जन्म-दिन है। आज विद्यालय न जाओ, कल जाना। आज शाम को तुम्हारे जन्म-दिन की पार्टी है। सभी लोग आयेंगे। तुम ही नहीं रहोगे तो कैसे काम चलेगा?" चिंटू बोला, "नहीं माँ! ये गलत है। विद्यालय न जाना सही नहीं है।आज अच्छा और खुशी का दिन है। जन्म-दिन की पार्टी तो शाम को है। स्कूल में टीचर बताते हैं कि हमें प्रतिदिन स्कूल समय से और खुशी-खुशी आना चाहिए, तभी हम पढ़-लिखकर आगे बढ़ पायेंगे। एक दिन अगर मैं स्कूल नहीं जाऊँगा तो बहुत पिछड़ जाऊँगा।" चिंटू के पिता बोले, "मेरा चिंटू सही कह रहा है। चलो, चिंटू बेटा! तुम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें स्कूल पहुँचा दूँगा। शाम को हम सब मिलकर जन्म-दिन की पार्टी मनायेंगे। यह सुनकर चिंटू खुश होकर तैयार होने के लिए चला गया।

संस्कार सन्देश

हमें प्रतिदिन समय से स्कूल जाने की आदत डालनी चाहिए।

कहानीकार

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 30-09-2024
177

बाल कहानी

योजना

एक जंगल में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। वह पेड़ जंगल के बीचों-बीच लगा था। उस जंगल का राजा शेर उस पेड़ के खोखले तने में छिप जाता और आते हुए जानवरों और मनुष्यों को खा जाता। कभी वह आस-पास ही दूसरी जगह छिप जाता और कभी किसी और जगह। कुछ दिनों बाद जानवरों और मनुष्यों ने वहाँ से गुजरना बन्द कर दिया। सभी शेर से परेशान थे। जब शेर का आतंक बहुत बढ़ा, तब वन-विभाग की टीम शहर से बुलायी गयी। उस टीम के सदस्यों ने बरगद के पेड़ पर अपना डेरा डाल दिया। कुछ दिनों तक जानवरों को वहाँ से निकलने दिया। शेर ने जानवरों का शिकार करने के लिए वहाँ छिपने की सोची और शेर पेड़ के खोखले तने में छिप गया। सोची-समझी रणनीति के तहत वहाँ एक गाय भेजी गयी। पेड़ के नीचे हरा चारा पहले से ही डाल दिया गया था। गाय पेड़ के पास जाकर हरा चारा खाने लगी। जैसे ही शेर ने गाय को देखा तो वह तुरन्त तने से बाहर आया और गाय पर झपटा। पेड़ के ऊपर वन टीम के सदस्यों ने तुरन्त जाल फेंक दिया। शेर जाल में फँस गया। जाल में फँसने के बाद भी वह दहाड़ता रहा लेकिन अब वह हमेशा के लिए कैद हो चुका था। सभी प्राणी निर्भय हो चुके थे। कुछ देर बाद पिंजड़ा मँगाकर उसे चिड़ियाघर भेज दिया गया।

संस्कार सन्देश-

खूँखार जानवरों से हमें दूर रहना चाहिए और उनके आतंक से बचने के लिए हमें तुरन्त वन-विभाग को सूचना देनी चाहिए।

कहानीकार

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान